International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 04(II), October - December, 2023, pp. 107-113

सिकंदरा का पत्थर नक्काशी उद्योगः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

डॉ. अजय सिंह कसाना*
डॉ. अंकिता गुप्ता**

सार

हस्तशिल्प किसी भी देश की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखते है। हस्तशिल्प से देश के लाखो लोगो को रोजगार मिलता है। पत्थर नक्काशी, हस्तशिल्प का ही एक प्रकार है। पत्थर नक्काशी उधोग में राजस्थान का देश में मुख्य स्थान रहा है। प्राचीन काल से ही राजस्थान स्थापत्य के क्षेत्र में अग्रणी रहा है। राजस्थान में भांडासर, देलवाडा व रणकपुर के जैन मंदिर, दौसा में आभानेरी की चांद बावड़ी व हर्षद माता का मंदिर आदि सभी में हस्तशिल्प एवं स्थापत्य कला का अद्भुत संगम दर्शाया हुआ है। राजस्थान में पाली जालोर, सिरोही, अजमेर, दौसा सहित कई जिलों के विभिन्न स्थानों पर पत्थर नक्काशी का कार्य किया जाता है। दौसा जिले के सिकंदरा कस्बे में भी पत्थर नक्कासी का कार्य बृहद स्तर पर किया जाता है इसलिए सिकंदरा पत्थर नक्काशी के क्षेत्र में प्रसिद्द है। पत्थर नक्काशी से बनी इन मूर्तियों को देश के विभिन्न भागों के साथ–साथ विदेशों में भी निर्यात किया जाता है। पत्थर नक्काशी उद्योग आसपास के लोगो को रोजगार उपलब्ध करवाता है लेकिन साथ ही इसके कुछ नकारात्मक पक्ष भी है जिनका अध्ययन यहां किया जा रहा है।

शब्दकोशः *हस्तशिल्प, पत्थर नक्काशी, मूर्तियां, सिकंदरा, सिलिकोसिस।*

प्रस्तावना

सिकंदरा कस्बा राजस्थान के दौसा जिले में अवस्थित है। यह जयपुर से 80 किलोमीटर और दिल्ली से 250 किलोमीटर दूर जयपुर–आगरा राष्ट्रीय राजमार्ग–21 पर स्थित है। दौसा को देव नगरी भी कहा जाता है। प्राचीन काल से ही हस्तशिल्प एवं स्थापत्य के क्षेत्र में दौसा जिले का नाम रहा है। सिकंदरा बलुआ पत्थर पर नक्कासी के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है। यहां के व्यापारी भरतपुर (बंशी पहाड़पुर), धौलपुर, करौली, ग्वालियर तथा खाटू सहित अन्य स्थानों से पिंक, रैड, यलो व ग्रे रंग के पत्थर के रो ब्लाक मंगवाकर यहां कलाकृतियां तैयार करवाते हैं। सिकंदरा का पत्थर नक्कासी कारोबार करीब 50 साल पुराना है जो मुख्यतः माली समाज के लोगों द्वारा प्रारंभ किया गया। यहां नेशनल हाइवे के किनारे संचालित इस उद्योग की सिकंदरा से लेकर मानपुर के बीच करीब 591 इकाइयां हैं। जिन पर करीब 10 हजार मजदूर पत्थर को तराश कर नक्काशी तैयार करते हैं। यहां छैनी–हथौड़ी से तैयार होने वाली नक्काशी बाद में मशीनों पर तैयार होकर देश व वदेशों में अपनी छाप छोड़ रही है। सिकंदरा में नक्काशी कार्य की शुरुआत यहां के मजदूरों ने पत्थर से जाली व चौखट बनाकर की। चिनाई में समृद्ध निवासियों के घरों के लिए नक्काशीदार पत्थर के बीम और चौखट शामिल थे। इसके बाद धीरे–धीरे इस व्यवसाय से जुड़े मजदूरों ने पत्थर पर नक्काशी कर पत्थर को मूर्त रूप देकर विभिन्न कलाकृतियां बनाना शुरु कर दिया। जो देश के विभिन्न हिस्सों सहित विदेशों में लोगों की पसंद बन गई है।

---

* सहायक आचार्य (भूगोल), राजकीय कन्या महाविद्यालय, सिकंदरा, दौसा, राजस्थान।
** सहायक आचार्य (अर्थशास्त्र), राजकीय कन्या महाविद्यालय, सिकंदरा, दौसा, राजस्थान।

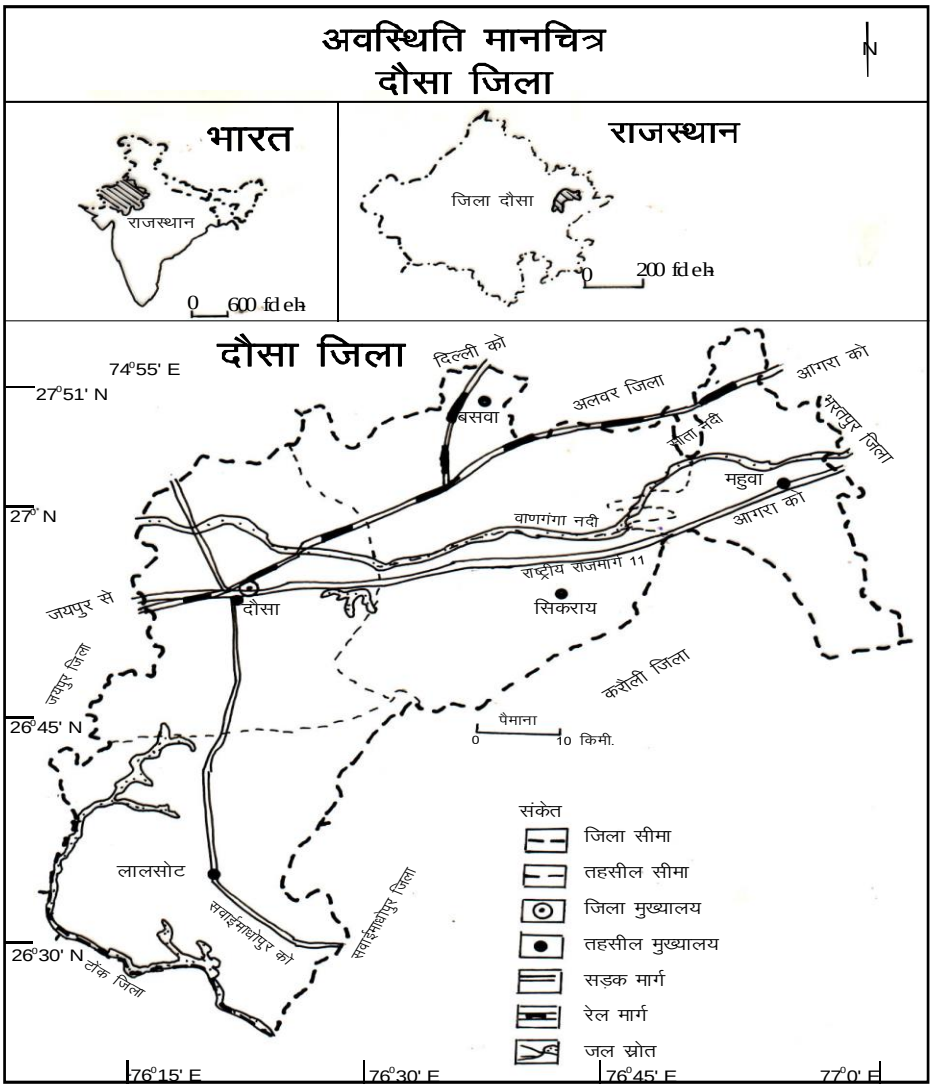

अध्ययन का उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य है–

- यहां निर्मित की जाने वाली विभिन्न कलाकृतियों के बारे में जानना।
- तैयार की गई कलाकृतियों की मांग व व्यापार का अध्ययन करना।
- इस उद्योग के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।
- इस उद्योग में कार्यरत कारीगरों की समस्याओं के बारे में जानना।

शोध विधि–तंत्र

दौसा जिले के पत्थर नक्काशी उद्योग के अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया है। प्राथमिक आंकड़े प्राप्त करने के लिए शोधकर्ता ने सिकंदरा में अवस्थित विभिन्न पत्थर नक्काशी इकाइयों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया है। द्वितीयक आकड़ो के लिए विभिन्न पुस्तकों, पत्रिकाओ, समाचार पत्रों का सहारा लिया है।

पत्थर की कलाकृतियां

सिकंदरा कस्बा कला, संस्कृति व शिल्प का विविधतापूर्ण वैभव समेटे हुए हैं। यह वैभव यहाँ के मेलों, एतिहासिक स्थलों, हस्तशिल्पो में बखूबी परिलक्षित होता है। माली, जो बागवानी समुदाय हैं, ने लगभग पांच दशक पहले छेनी जैसे पारंपरिक उपकरणों का उपयोग करके उत्साह के साथ पत्थर की नक्काशी की थी। बाद में तकनीकी विकास के साथ–साथ कई प्रकार के उपकरण और काटने की मशीनों (मोटराइज्ड स्टोन कटर) के उपयोग ने इस कार्य को और आसान बना दिया। कारीगरों ने समय की मांग के साथ–साथ स्थानीय पत्थरों के अलावा बलुआ पत्थरों के विभिन्न रंगों का उपयोग करना शुरू कर दिया है। यहां पत्थर की कलात्मक चिराई कर मकानों की चौखट, जाली–झरोखें, मेहराब, डिजाइनर खंबे, दीपक, फव्वारा, फर्नीचर, जानवरों की आकृतियां, मानवकद मूर्तियां, देवी–देवताओं की मूर्तियां, मंदिर के मॉडल आदि कलाकृतियां तैयार की जाती हैं। पत्थर नक्काशी को लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सिकंदरा की पत्थर नक्काशी स्थान बना चुकी है। सिकंदरा, इंडियन स्टोन–मार्ट मे भी कई बार प्रथम स्थान पर रहा है।

देश–विदेशों में पहचान बना चुकी सिकंदरा की पत्थर नक्काशी, इन दिनों दिल्ली–मेरठ एक्सप्रेस वे की शान बढ़ा रही हैं। पूरे एक्सप्रेस वे पर यहां की करीब 55 कलाकृतियां इस हाइवे से गुजरने वाले लोगों के दिल को छू रही है। वर्ष 2018 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली में तैयार हुए दिल्ली–मेरठ एक्सप्रेस वे का उद्घाटन किया था। एक्सप्रेस वे पर सिकंदरा के मजूदरों ने हवामहल, लालकिला, इंडिया गेट, कुतुबमीनार, जलियावाला बाग, कीर्ति स्तंभ, अशोक चक्र, चारमीनार सहित करीब 15 चक्र की कलाकृतियां तैयार कर लगाई है जो इस हाइवे की शान बढ़ा रही है।

1. हनुमान जी की मूर्ति

2. दीपक

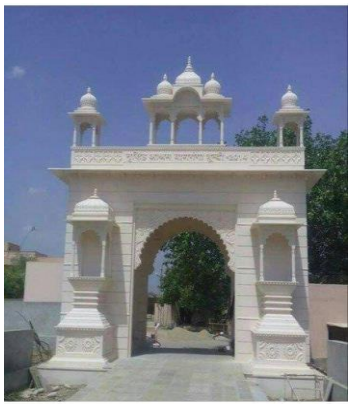

3. दरवाजा

4. हाथियों की मूर्ति

5. फव्वारा

6. जालियां

7. मंदिर का मॉडल

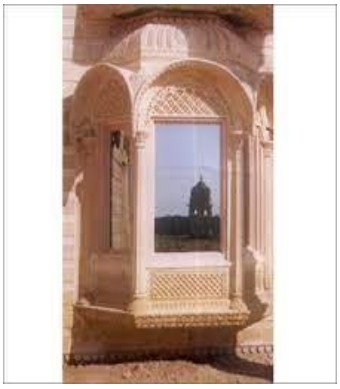

8. झरोखा

9. झोपड़ी

मांग एवं व्यापार

सिकंदरा, जो कभी एक पिछड़ा क्षेत्र था, अब पत्थर कलाकृतियों के व्यापार का केंद्र बन गया है। यहां पत्थर पर नक्काशी कर तैयार की गई कलाकृतियों की देश तथा विदेश में अत्यधिक मांग है। उत्तर भारतीय राज्यों विशेष रुप से दिल्ली, हरियाणा और पंजाब से बड़ी संख्या में खरीदार न केवल छोटी कला–कृतियां, बल्कि पत्थर के खंभे, पत्थर की बाड़, कुर्सियां और विभिन्न उद्यान सामान खरीदने के लिए यहाँ आते हैं। अब दक्षिणी राज्यों, विशेष रूप से तमिलनाडु और कर्नाटक से भी खरीददार यहां आने लगे है। देश के बड़े शहरों की बड़ी होटलों में सिकंदरा की ही पत्थर नक्काशी का अधिक उपयोग होता है। देश के अतिरिक्त अमेरिका, कनाडा, जर्मन, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, जापान, कुवैत, दुबई, सऊदी अरब और दक्षिण पूर्व एशिया में यहां की नक्काशी की मांग अधिक है। नक्काशी को यहां के व्यापारी सीधे अथवा निर्यातकों के सहारे पानी के जहाज से विदेशों में भेजते हैं। प्रत्येक दो वर्ष में आयोजित होने वाले इंटरनेशनल स्टोन मार्ट में भी सिकंदरा की ही गूंज रहती है। स्टोन मार्ट में हमेशा प्रथम व द्वितीय पुरस्कार सिकंदरा की ही पत्थर नक्काशी को मिलता है।

पत्थर नक्काशी उद्योग के प्रभाव

इस उद्योग ने स्थानीय लोगों को सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही प्रकार से प्रभावित किया है जिनका विवरण निम्नानुसार है–

- **सकारात्मक प्रभाव**

सिकंदरा के पत्थर नक्काशी उद्योग ने क्षेत्र के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। एक तरफ जहां यह पर्यटन को बढ़ावा दे रहा है तो दूसरी तरफ वह रोजगार आदि के अवसर भी उपलब्ध करवा रहा है। स्थानीय स्तर पर कुशल मैकेनिक्स की मांग होने के कारण युवा छात्र व्यवसायिक प्रशिक्षण की ओर आकर्षित हो रहे हैं। इस उद्योग के सकारात्मक प्रभाव निम्नलिखित हैं–

- राजस्थान के दौसा जिले का सिकंदरा कस्बा अब पत्थर की कलाकृतियों के व्यापार का एक प्रमुख केंद्र बन गया है। राष्ट्रीय राजमार्ग 21 (जयपुर–आगरा राजमार्ग) पर एक ड्राइव के दौरान सिकंदरा कस्बे से गुजरने के दौरान सैकड़ों कारीगरों को पत्थर की कला बनाते हुए देखा जा सकता है। यहां से गुजरने वाले कई पर्यटक अक्सर ड्राइवर को कार रोकने के लिए कहते हैं क्योंकि सिकंदरा में ये पत्थर नक्काशी उद्योग राजमार्ग के दोनों तरफ ही अवस्थित है। देशी–विदेशी पर्यटक यहां रुक कर कारीगरों द्वारा बनाई गई विभिन्न कलाकृतियों को अपने कैमरे में कैद करते हैं। इस प्रकार सिकंदरा के पत्थर नक्काशी उद्योग ने पर्यटन को बढ़ावा दिया है।
- यहां यह कहने में बिल्कुल संकोच नहीं हो रहा है कि इस उद्योग ने सिकंदरा के आसपास के लोगों को आर्थिक समृद्धि प्रदान की है। जो लोग पहले केवल जीवन यापन के लिए कृषि पर

निर्भर थे उनमें से अधिकांश आज इन्हीं उद्योगों में कार्य कर मजदूरी प्राप्त कर रहे हैं। कृषि से पत्थर शिल्प की ओर जाने से स्थानीय लोगों को समृद्धि मिली, जो कभी कृषि के लिए मानसून पर बहुत अधिक निर्भर थे। एक प्रमुख व्यापारी रामेश्वर प्रसाद कहते हैं 50 किलोमीटर के दायरे में फैले पूरे सिकंदरा क्लस्टर का कुल कारोबार 150 करोड़ रुपये से लेकर अब 200 करोड़ रुपये तक हो सकता है। 591 से अधिक छोटी और मध्यम आकार की इकाइयाँ हैं, जो 25,000 से अधिक व्यक्तियों को रोजगार देती हैं।

- इस उद्योग ने क्षेत्र के युवाओं में औद्योगिक प्रशिक्षण के प्रति अभिरुचि जागृत की है। क्षेत्र के युवा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) में प्रवेश लेकर मशीनों का संचालन और रखरखाव करना सीखने लगे हैं। उनमें से कुछ ने न केवल पत्थरों को तराशने में, बल्कि कटर और मोटर जैसे छोटे उपकरणों को संभालने और मरम्मत करने का कौशल हासिल कर लिया है। पहले पत्थर के प्रसंस्करण में अक्सर उपयोग किए जाने वाले औजारों और मोटरों को पहले मरम्मत के लिए दौसा या जयपुर ले जाने की आवश्यकता होती थी लेकिन स्थानीय युवाओं ने उस आवश्यकता को भी खत्म कर दिया।

- **नकारात्मक प्रभाव :**

पत्थर नक्काशी उद्योग के नकारात्मक पक्ष के अंतर्गत मुख्य रूप से निम्न दो पक्षों को शामिल किया गया है– उद्योग का पर्यावरण पर प्रभाव व उद्योग का मानव पर प्रभाव। इस उद्योग के नकारात्मक पक्ष का वर्णन निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर किया गया है–

- पत्थर नक्काशी उद्योग से निकले अवशिष्ट एवं धुलकणों से पर्यावरण पर दुष्प्रभाव पडा है। इसके कारण आसपास का वातावरण प्रदूषित हो रहा है। आसपास के खेतो में पत्थरों की कणों के वायु के साथ उड़ उड़ कर जमा होने से उनका उपजाऊपन समाप्त होता जा रहा है। छोटी छोटी वनस्पतियाँ पैदा होने से पहले ही ख़त्म होने लगी है।
- भले ही पत्थर नक्काशी ने सिकंदरा का देश–विदेश में नाम रोशन किया है, लेकिन पत्थर को तराश कर इनमें जान फूंकने वाले मजदूर खुद अपनी जान को दांव पर लगा रहे हैं। इस क्षेत्र के लोगो की जीवनरेखा छोटी होती जा रही है। आसपास के क्षेत्र के लोगो एवं मजदूरो में श्वास एवं फेफड़ो सम्बन्धी बीमारियों ने घर कर लिया है। पत्थर तराशने के दौरान उड़ने वाली डस्ट इन मजदूरों के फेंफड़ों को जकड़ रही है। इसी कारण से लगभग 200 मजदूर सिलिकोसिस के दंश से अपनी जान गंवा चुके हैं और बहुत से बीमार चल रहे हैं। सेंड स्टोन दस्तकार विकास समिति के निवर्तमान अध्यक्ष व पत्थर व्यवसायी खैरातीलाल सैनी का कहना है कि पत्थर उद्योग की बड़ी समस्या सिलिकोसिस बीमारी की है। इस उद्योग से जुड़े बहुत से श्रमिक सिलिकोसिस से पीड़ित है जो उपचार के लिए भटक रहे हैं, लेकिन उन्हें सरकार की ओर से कोई मदद नहीं मिल रही है। ऐसे में अपेक्षा है कि सरकार इस बीमारी से रोकथाम के लिए ठोस योजना तैयार करे।

पत्थर नक्काशी उद्योग की समस्याएं एवं समाधान के सरकारी प्रयास

इस पत्थर नक्काशी उद्योग की समस्याएं एवं सरकार द्वारा उनके समाधान के लिए किए गए प्रयासों का विवरण निम्नानुसार है–

- **समस्याएं**

वर्तमान समय में इस पत्थर नक्काशी उद्योग के सामने अनेक समस्याएं खड़ी है। ये समस्याएं सिलिकोसिस बीमारी, खनन प्रतिबंध, जीएसटी, अन्य प्रकार के टैक्स तथा समुचित स्थान की कमी आदि रूपों में देखी जा रही है जिन पर शोधकर्ता ने संक्षिप्त रूप से प्रकाश डाला है।

- पहले इस उद्योग पर सिलिकोसिस बीमारी ने कहर बरपाया। इसके बाद अब कोरोना के चलते इस व्यवसाय को करोड़ों रुपए का नुकसान हुआ है। कोरोना के चलते यहां के व्यापारियों को नए ऑर्डर पर्याप्त नहीं मिलने से व्यापारी पुराने कामों को ही पूरा करने में लगे हैं। व्यापारियों को मिलने वाले नए आर्डर्स की संख्या में कमी आई है।
- रेत खनन पर हालिया प्रतिबंध ने निर्माण व्यवसाय को बुरी तरह प्रभावित किया है। इन फैसलों का खामियाजा जिन लोगों को भुगतना पड़ा, वे मजदूर हैं जो पत्थर की मूर्ति और निर्माण व्यवसाय में कार्यरत हैं। पत्थर शिल्प ईकाई पर काम करने वाले शभु दयाल ने कहा कि मांग में कमी से रोजगार प्रभावित हुआ है क्योंकि मजदूरों की भर्ती में भारी कमी आई है।
- शारदा स्टोन्स के रामकरण सैनी के अनुसार पत्थर पर उच्च जीएसटी ने तैयार उत्पादों की कीमतों को बढ़ा दिया है। वह कहते हैं कि कच्चे पत्थरों पर 5ः जीएसटी लगता है जबकि तैयार उत्पादों पर 18ः जीएसटी लगता है, जिससे उत्पाद महंगा हो हो गया है तथा उसकी मांग में कमी आ गई है। सेंड स्टोन दस्तकार विकास समिति के अध्यक्ष खैरातीलाल सैनी का कहना है कि इस उद्योग में अधिकांश कार्य हाथों से होता है। पत्थर को श्रमिकों द्वारा हाथों से तराश जाता है। ऐसे में इस उद्योग को सरकार को जीएसटी से मुक्त करना चाहिए, जिससे इससे जुड़े व्यापारियों को राहत मिल सके।
- राजस्थान अपने पत्थरों के लिए जाना जाता है लेकिन उन पर भारी टैक्स लगता है। शारदा स्टोन्स के रामकरण सैनी कहते हैं कि ओवरलोडिंग के नाम पर रॉयल्टी और पुलिस व परिवहन विभाग द्वारा उत्पीड़न ने उद्योग को बुरी तरह प्रभावित किया है। उन्होंने कहा कि इससे व्यवसाय में गिरावट आई है।
- यहां के व्यापार की मुख्य समस्या व्यापार के लिए स्थान की है। व्यापारियों के पास जगह नहीं होने से उन्हें परेशानी होती है। यहां कई व्यापारी किराए की भूमि लेकर इस उद्योग को संचालित कर रहे हैं। ऐसे में व्यापारी यहां स्टोन पार्क का निर्माण चाहते हैं, जिससे व्यापारियों को एक ही स्थान पर बसाया जा सके। इसे लेकर पूर्ववर्ती सरकारों ने स्टोन पार्क की घोषणाएं भी की हैं, लेकिन उन घोषणाओं की क्रियान्वित नहीं होने से व्यापारियों को अब तक स्टोन पार्क की सुविधा नहीं मिली है।

- **सरकारी प्रयास**
  - राजस्थान सरकार द्वारा स्थापित सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ स्टोन्स (सीडीओएस), आयामी पत्थर क्षेत्र को विकसित करने और बढ़ावा देने और समर्थन करने के व्यापक उद्देश्यों के साथ अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ उत्कृष्टता का केंद्र है। सीडीओएस ने वर्षों से सिकंदरा के कारीगरों को अपने उपकरणों और कौशल को उन्नत करने में मदद की है, और उन्हें खरीदारों के साथ बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित किया है। अब वे शोरूम के माध्यम से व्यापार करते हैं और अपनी वेबसाइट बना चुके हैं और अपने स्वयं के ब्रोशर प्रकाशित कर चुके हैं। राजस्थान सरकार की एक अन्य एजेंसी, ग्रामीण गैर कृषि विकास एजेंसी (ल्न्च्।) ने भी बाजार का समर्थन प्रदान करके सिकंदरा में पत्थर की नक्काशी के समूहों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
  - जिले के सिकन्दरा पत्थर कारोबार को लेकर क्षेत्रीय विधायक व महिला एवं बाल विकास मंत्री ममता भूपेश ने हाल ही कहा है कि बहुत जल्द इस कारोबार को पुनर्वास के माध्यम से व्यवस्थित किया जाएगा। जिसकी सभी तैयारियां प्रशासनिक स्तर पर की जा रही है। मंत्री ने संकेत दिए कि दौसा जिले में स्टोन पार्क स्थापित किया जाएगा। इसके लिए करीब 200 बीघा सरकारी भूमि को चिह्नित किया जा रहा है।

निष्कर्ष

हस्तशिल्प हमारी संस्कृति का हिस्सा रहा है। दौसा जिले में सिकन्दरा पत्थर नक्कासी का प्रमुख केंद्र रहा है अतः क्षेत्रीय कारीगरों एवं मजदूरो को कार्य कुशलता में वृद्धि के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। राज्य सरकार को पत्थर नक्काशी करने वाले मजदूरो को सिलिकोसिस बीमारी से बचाने के लिए भी प्रयास किये जाने चाहिए। इस हेतु कारीगरों एवं मजदूरों को सिलिकोसिस से बचाव के लिए भी प्रशिक्षित किया जाए। सिकंदरा जो कि दौसा जिले का प्रमुख पत्थर नक्काशी केंद्र है, इसी की तरह अन्य केन्द्रों को भी विकसित किया जाये ताकि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दौसा जिले को एक विशिष्ट पहचान मिल सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Aman Nath, Francis Wacziarg (1987) "Arts and Crafts of Rajasthan", Mapin Publishing, pp 131.
2. Narayana Rao, M.V. & Srinath D.N. (2002) "Our handicrafts", National Book Trust, India, pp 43.
3. Tillotson, Giles (2002) "Stones in the Sand: The Architecture of Rajasthan", The Marg Foundation, pp 74.
4. Rajasthan, India (2011) "The Stone Crafts of Rajasthan: A Manual", Centre for Development of Stones (CDOS), pp 167.
5. India Stonemart, 2020.
6. Magazines- Yojna, Kurukshetra.
7. Daily Newspaper- Dainik Bhaskar, Rajasthan Patrika.

❖◆❖